शोध पत्र- हिन्दी

डॉ. शिव प्रसाद सिंह के कथा–साहित्य में ग्राम्य जीवन का चित्रण

*** डॉ. शीला देवी**

स्वतंत्राता के बाद नये दौर की 'नयी कहानी' (कथा–साहित्य) की शुरूआत हिन्दी में ग्राम–जीवन अथवा भारतीय कृषक जीवन को लेकर लिखी नयी ग्राम कथाओं से होती है। इस सिलसिले में शिवप्रसाद सिंह की 'दादी माँ' शीर्षक कहानी का उल्लेख किया जाता है, जो अक्टूबर 1951 के प्रतीक में पहली बार प्रकाशित हुई थी और जिसने गाँव की मिट्टी की सोंधी गन्ध और ताजगी के कारण लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। यह ग्राम–बोध की प्रथम कहानी थी जिसमें निजी अनुभव और भोगे हुए सत्य की व्यथा को व्यक्त किया गया था। फिर तो गाँव के अनेक विषयों को लेकर लिखी जाने वाली कहानियों की बाढ़ आ गई। ऐसे कथाकारों में शिवप्रसाद सिंह अग्रगण्य है। इनके अब तक प्रकाशित सभी कहानी संग्रहो––अन्धकूप, एक यात्राा सतह के नीचे, अमृता, आर–पार की माला, कर्मनाशा की हार, इन्हें भी इन्तजार है, भेड़िया, अन्धेरा हँसता है, मेरी प्रिय कहानियाँ तथा मुरदासराय तथा उपन्यास अलग–अलग वैतरणी, गली आगे मुड़ती है, नीला चाँद, शैलूष, औरत, दिल्ली दूर है तथा कुहरे में युद्ध, में सर्वत्रा परिवर्तनशील ग्राम जीवन की प्रधानता है। अलग–अलग वैतरणी जैसा बृहद् उपन्यास तो नये ग्राम–बोध का प्रामाणिक दस्तावेज ही है, जहाँ पार्श्वभूमि में अंकित ग्राम 'करैता' आधुनिक भारत (कम से कम उत्तर भारत) का जीवन्त प्रतिरूप हो जाता है।

यहाँ ग्रामीण जीवन से रहित आधुनिकता की चुनौती को आधुनिक ग्राम–बोध के स्तर पर स्वीकारने की प्रवृत्ति के कारण व्यक्तियों और परिस्थितियों के बीच होने वाले व्यापक मोहभंग की विडम्बना का सजीव और खरा कथन है।

शिवप्रसाद सिंह गाँव से दूर रहकर भी गांव से कटे नहीं है। आपने आधी उम्र गाँव में ही बिताई है, इसलिए गाँवों को इतना देखा है कि मानसिक रूप से अब भी स्वयं को उसके नजदीक ही पाते हैं। गाँव आना जाना तो लगा ही रहता था। वर्ष में दो–चार बार भी गाँव जाते, तो सारे ऊपरी बदलाव दिखाई पड़ जाते। कथाकार की अपनी मान्यता है कि ''गाँव का जीवन दूर से ही रचनाक्रम में मेरे लिए सहायक है। यदि गाँव के प्रति आसक्ति ही बनी रहे तो शायद चीर–फाड़ उतनी कारगर सिद्ध न हो।'' सम्बन्धों के बीच भौतिक दूरी की निरर्थकता का यही प्रतिपादन जायसी ने भी इन शब्दों में किया है–

कवि बियास कँवला रस–पूरी।
दूरी सो नियर, नियर सो दूरी।।
नियरे दूरफूल जैसे कांच।
दूरि जो नियरे, जस गुड़ चाँव।।

भँवर आइ बनखंड सन लेइ कँवल कै बास।
दादुर बास न पावई, भलहि जो आछै पास।।

–पदमावत, स्तुति खण्ड

डॉ. शिवप्रसाद सिंह हिन्दी के उन आधुनिक लेखकों में से हैं, जो सर्जन और विवेचन, दोनों धरातलों पर साहित्य का निर्माण करते तथा उसे दिशा देते थे। अत्यधिक अनुशासित और अपने ही तक सीमित रहते हुए भी वे एक ऐसे साहित्यकार कहे जा सकते हैं, जो समष्टि संवेदना को व्यष्टि–जबान से कहते और कलम की साक्षी में उस पर सहृदय की मोहर लगवाते थे। उनका कथासाहित्य इस तथ्य का जीवंत प्रमाण है। अकादमिक आलोचना उनका व्यवसाय है, किन्तु इसमें भी वे परम जागरूक, तर्क–प्रभावी एवं सत्यान्वेषी शोधक की गौरवपूर्ण भूमिका निभाते थे। इसी दिशा में उनकी समस्त आलोचनात्मक रचनाओं की परिगणना होती है।

कथाकार शिवप्रसाद सिंह के कथा–साहित्य में भौगोलिक प्राकृतिक व सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव कथावस्तु के सर्जन में दिखायी पड़ता है। शिवप्रसाद सिंह के कथा–साहित्य में भौगोलिक परिवेश का चित्राण या तो उनके जीवन से जुड़ा है या फिर उनके ज्ञान–अध्ययन पर आधारित है। यही कारण है कि काशी और दिल्ली के भौगोलिक, प्राकृतिक व सांस्कृतिक परिवेश को अधिक चित्रित किया गया है। कथाकार भारतीय संस्कृति के उदारतावादी दृष्टिकोण का पक्षधर रहा है।

शिवप्रसाद सिंह का पहला कहानी संग्रह 'आरपार की माला' (1955) उत्तर–जमींदार–युग को रूपायित करता है। इसी संग्रह में प्रसिद्ध कहानी 'दादी मां' संकलित है जिसके 'नयी कहानी' का आरम्भ माना जाता है। दूसरा कहानी–संग्रह 'कर्मनाशा की हार'' (1958) में नया सौन्दर्यबोध, नयी मानवीय संवेदनायें और ग्राम–जीवन के नये कोण उभरे हैं। दलितोन्मेष ओर लघुमानवोत्थान की पताका ऊँचाई पर फहरा रही है। लेखक समाज के अदेख, अस्वस्थ और उपेक्षित अंग को कला की कलम से छूकर पनपना देता है।

शिवप्रसाद सिंह के ग्रामीण कथा–साहित्य में जहाँ तक एक ओर कथाकार ने परिवार में स्थित विभिन्न समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है वहां पारिवारिक एकता , मेल–जोल, त्याग और आदर्शों को भी आंखों से ओझल नहीं होने दिया। यह सच है कि विभिन्न परिवर्तनों का प्रभाव गांवों तक पहुँचा है किन्तु अनेक कहानियाँ परिवर्तन की बाढ़ से अछूती पारिवारिक कहानियों का चित्राण करने वाली भी है। 'कर्मनाशा की हार' में भैरों पाण्डे छोटे भाई के लिए अनेक कष्ट सहते हैं। 'आँखें' कहानी में गुलाबो की बूढ़ी माँ को अपने साथ रखना चाहती

है किन्तु पति के मना करने पर वह बेसहारा मां के लिए पति को भी त्याग देती है। चौराहे पर पान की दुकान खोल लेती है और दुनिया की दृष्टि में वेश्या बनती है।

वस्तुतः डॉ. शिवप्रसाद सिंह एक वरिष्ठ कथाकार है। प्रत्येक साहित्यकार अपनी शैली का साहित्यकार होता है, तथापि उस पर किसी न किसी बड़े साहित्यकार का प्रभाव दृष्टिगत हो जाता है। शिवप्रसाद सिंह पर ऐसे किसी साहित्यकार का प्रभाव ढूँढना अत्यन्त कठिन कार्य है। समाज में फैली विसंगतियाँ, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और वर्ग–संघर्ष उनके लेखन की मूल प्रेरणा है। हाँ यदि किसी दर्शन ने उन्हें प्रभावित किया है, तो योगी अरविन्द के साधनाजन्य दर्शन ने उनकी मानवीय संवेदनाओं को उद्वेलित करने वाली दार्शनिक विचारधारा ने।

*** प्राध्यापिका हिन्दी विभाग, बी. एस. के एम. एजुकेशन कॉलेज, जीन्द**

संदर्भ ग्रंथ

1 1. उपजीव्य ग्रन्थ :
2 डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास :
3 अलग–अलग वैतरणी–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1967,दिल्ली– 1992
5 दिल्ली दूरा है–वही–1993
6 कुहरे में युद्ध–वही–1993
7 डॉ0 शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ :
8 अन्धकूप (कहानी संग्रह)–लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
9 एक यात्राा सतह के नीचे (कहानी संग्रह)–वही
10 अमृता (कहानी संग्रह)–वही
11 आर–पार की माला (कहानी संग्रह)–वही
12 कर्मनाशा की हार (कहानी संग्रह)–राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
13 इन्हें भी इन्तजार है (कहानी संग्रह) –वही
14 भेड़िया (कहानी संग्रह)–वही
15 अन्धेरा हँसता है (कहानी संग्रह)–वही
16 मेरी प्रिय कहानियां (कहानी संग्रह)–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली
17 मुरदा सराय (कहानी संग्रह)–वही
2. सहायक ग्रंथ :
19 अमृतलाल नागर : भारतीय–डॉ. पुष्पा बंसल
20 उपन्यासकार–दिनमान प्रकाशन, दिल्ली–1987
21 अमृतलाल नागर का उपन्यास–प्रकाश चन्द्र मिश्र,
22 साहित्य–साहित्य भारती, कानपुर प्रथम संस्करण